क्या फिर वही होगा

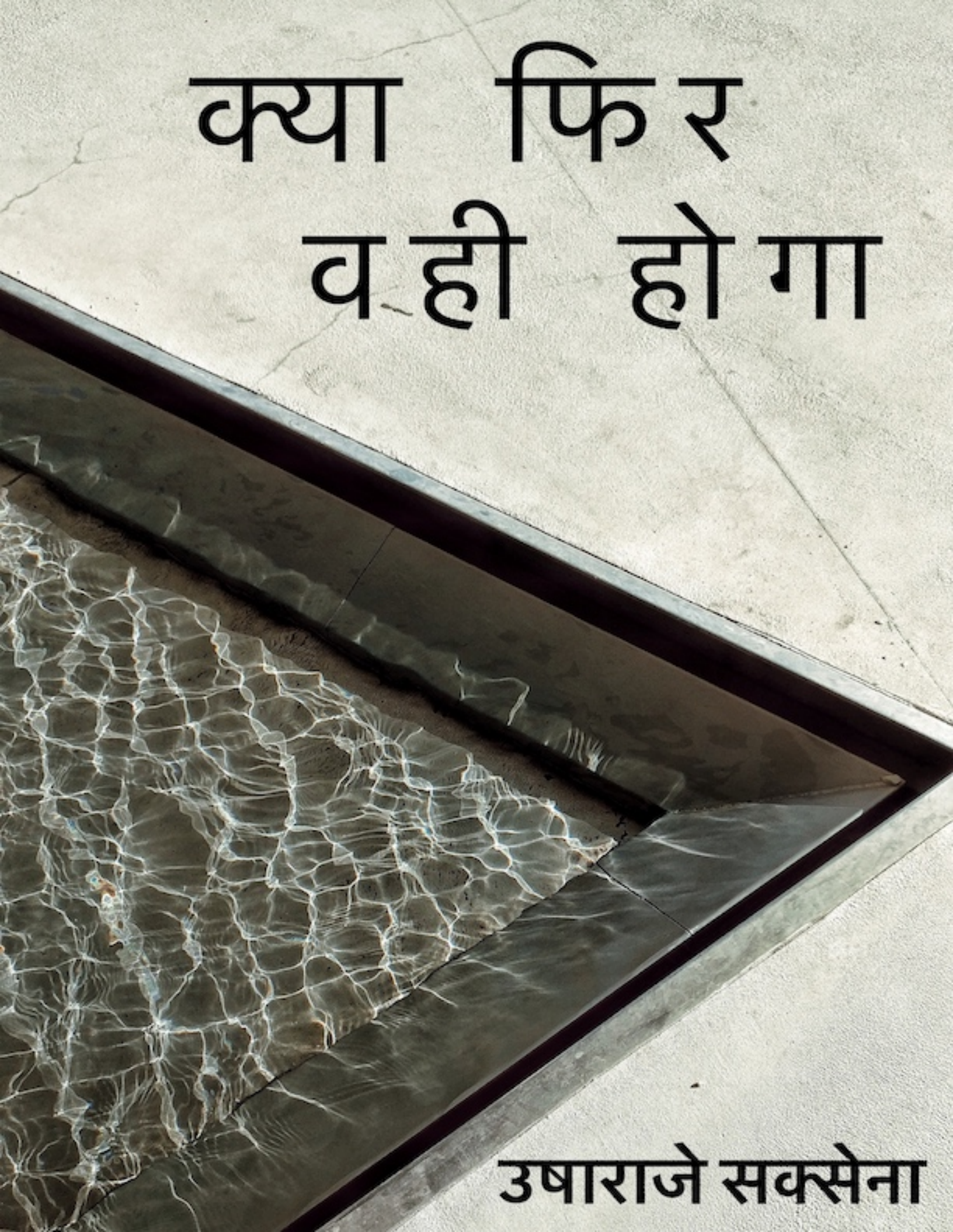

उषाराजे सक्सेना

क्या फिर वही होगा

उषाराजे सक्सेना

परिचय : उषाराजे सक्सेना

जन्म

22 नवम्बर, 1943

स्थान

गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

शिक्षा

स्नातकोत्तर अंग्रेजी साहित्य, गोरखपुर विश्वविद्यालय

विदेश में आगमन

1967

प्रतिष्ठित कहानीकार एवं कवियित्री उषाराजे सक्सेना (यू.के.) सर्जनात्मक प्रतिभा संपन्न एक ऐसी लेखिका हैं जिनके साहित्य में अपने देश की सभ्यता, संस्कृति एवं भाषा के प्रति गहरे लगाव और सच्चे राग की अभिव्यक्ति मिलती है। उषा जी अपने साहित्य द्वारा प्रवासी भारतीय जीवन के साथ लंदन के स्थानीय निवासियों और अन्य माइग्रेंट समुदाय (योरोपीय, अफ्रिकन के बीच रहने तथा उनके साथ हुए अपने साक्षात अनुभवों को प्रतिबिम्बित करतीं हैं। साथ ही वह अपने यथार्थबोध तथा सांस्कृतिक दृष्टि के प्रिज्म से वहाँ की सामाजिक एवं मानवीय वास्तविकताओं से परिचित कराती हैं। इस तरह कलात्मक आस्वाद के साथ-साथ आपकी कहानियाँ कविताएँ एवं शोधपरक लेख आदि से हमें अपने समाजशास्त्रीय समझ को पुख्ता करने का आधार भी देती हैं।

यू.के. की एक मात्र साहित्यिक पत्रिका पुरवाई की सह-संपादिका, उषाराजे यू.के. हिंदी समिति की पूर्व अध्यक्ष ग्रेट ब्रिटेन हिंदी लेखक संग की अध्यक्ष साउथ लंदन विमेंस गिल्ड ऑफ हिंदी राइटर्स की संस्थापक एवं संरक्षक हैं। आप यू.के., में होनेवाले लगभग सभी राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन-न्यूयॉर्क में अप्रवासी हिंदी साहित्य सत्र की बीच वक्ता रहीं।

सन् 2000 में आए गुजरात के प्रलयंकारी भूकंप में 30 जनवरी से 15 फरवरी तक आपने भुज एवं भड़ूच में बच्चों एवं महिलाओं की सेवा एवं काउंसिलिंग की।

उषा जी कई पुरस्कारों से सम्मानित हो चुकी हैं जिनमें प्रमुख हैं : हिंदी विदेश प्रसार सम्मान - हिंदी संस्थान, उत्तर प्रदेश, लखनऊ; हरिवंश राय बच्चन पुरस्कार - भारतीय उच्चायोग, लंदन; नॉट सो साइलेंट- लंदन बॉरो ऑफ मर्टन।

प्रमुख कृतियाँ

काव्य- संग्रह-विश्वास की रजत सीपियाँ (1996), इंद्र धनुष की तलाश में (1997), कहानी संकलन-मिट्टी की सुगंध (ब्रिटेन के हिंदी कहानीकारों का पहला संग्रह, 1999), प्रवास में (2002), वाकिंग पार्टनर (2004), वह रात और अन्य कहानियों (2007), निबंध-ब्रिटेन में हिंदी (2006)

संप्रति

अवकाश प्राप्त अध्यापक

सह-संपादक : पुरवाई तथा स्वतंत्र लेखन

अध्यक्ष : ग्रेट ब्रिटेन हिंदी लेखक संघ

उपाध्यक्ष : यू.के. हिंदी समिति

उषाराजे सक्सेना का यह कविता-संग्रह कविता की तीन विधाओं का एक मंच पर किया गया उद्घोष है। इसमें अतुकांत कविताओं का विचार-तत्व भी है, इसमें गीत की लालित्यपूर्ण भाव-प्रवणता भी है और गजल-जैसी विधा की नाजुक खयाली भी है। लेकिन बड़ी बात यह है कि अलग-अलग तीन रास्तों पर चलते हुए भी वे अपने भावलोक और विचार बिन्दुओं में कोई अलगाव नहीं रखतीं। उनकी संवेदना का धरातल एक ही है। इस संवेदना का धरातल एक ही है। इस संवेदना में प्रेम की झलक, शोषितों के प्रति लगाव, हारे-थकों में उत्साहपूर्वक आगे बढ़ने की ललक और जागृति, वर्तमान में जो कुछ घटित हो रहा है उसका मार्मिक विश्लेषण तथा उस पर गहरी काव्यात्मक प्रतिक्रिया के साथ-साथ उनकी अपनी सकारात्मक सोच, आदि बहुत-सी बातों के दर्शन होते हैं।... और इन्हीं के माध्यम से अचानक हमारा साक्षात्कार कवयित्री से भी हो जाता है। दिखाई शब्द देते हैं और दर्शन हो जाते हैं रचनाकार के। कविता इसी जादू को लेकर हमारे सामने आती है। जादू, मैं इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि कविता में भी जादू-जैसा सम्मोहन होता है। जैसा कि उषाराजे जी के इस संग्रह की कविताओं में है। किंतु जादू में तो सम्मोहन के साथ-साथ एक चालाकी, असल बात को छुपाने का कौशल, आँखों का एक धोखा तथा और बहुत-सी बातें शामिल होती हैं। इसीलिए कविता जादू होते हुए भी न तो चालाकी है, न ही छुपाव और न ही धोखा। वह सचाई के धागों से बुना हुआ एक ऐसा आँचल है जिससे सचाईयाँ छन-छनकर शब्द का आकार ग्रहण करती चलती हैं। उषाराजे के इस संग्रह की कविताएँ हैं जिसमें सम्मोहन तो है किंतु यह सम्मोहन सचाई का सम्मोहन है और तर्क तथा चिंतन का सम्मोहन।

कुँअर बेचैन

अनुक्रम

कविता

रो मत लड़की...	19
अधूरी कविता...	20
व्यस्त रहा	21
अपनी राजनीति में	22
उस दिन	24
मकड़ी के जाले-सी	26
खुशबू	27
रोज देखती हूँ	28
जीने के लिए	29
पेड़ सी खड़ी मैं	31
तन्हाई	32
वह मदर टेरेसा थी	33
हमारे जैसा	34
नाम अबला	35
पूर्वजों की गंगाजली	39
भारत और भारतीय संस्कृति	40
माँ भारती	42
साँप और फ़रिश्ता	43

भावनाओं का दंगल 44

ताल-मेल 45

कभी-कभी 46

क्या फिर वही होगा? 48

उदास लम्हों के बीच 50

...पंख फड़फड़ाते कपोत 52

जब कभी 53

अनजाने ही 55

निरंतर शामिल 57

तुम कहती थीं 59

तुम्हारा जिक्र 61

ओ अजानी ओस-बूँद 64

सिर धुनती है हवा 65

सन्नाटा 67

कोई मुंडेरी नहीं 69

ठूँठ हो रहे हैं पेड़ 71

इंद्रधनुष की तलाश में 73

समर्पण 74

अस्तित्व की पहचान 75

यात्रा का आरम्भ 76

पद-चिह्न 77

अच्छा लगता है भागना 78

कैसे बताऊँ अपना पता	79
अमर सुगंध	80
तुम्हें	81
खेलने के लिए	82
तुम्हारा आना	83
पत्ते झरते रहे	84
दरकती गई मैं	86
विकलांग की व्यथा	87
दलित	88
स्नेह की गरमाई	90
धरती के सीने पर	91
सुनो	92
कहीं कोई हरियाली नहीं	93
बू-ए-खूँ की मेहंदी	95
हमेशा की तरह	97
ख़बर मिली	98
समन्दर खुश्क है	99
मैं और तुम	101
देवता और बुधिया	102
आरजू	104
लड़कियाँ	105
जंग का जारी रहना जरूरी है	107

गीत-नवगीत

देस मेरा बन गया परदेस 110

गीत 111

दीपावली गीत 112

चली है साँवरी, प्रीतम से.... 114

याद की चिन्गी... 115

'गोरी हुई पराई' 117

प्यार की पुकार 118

बिरहन की रात 120

खिली नहीं कली 122

ग़ज़लें

संवेदना के स्वर 142

लाशों के मध्य 143

एक अबोध बाला 144

भूकंप के मध्य 145

खुद मर गई है मौत 146

वो 148

नृशंस हृदयहीन 149

दर्द भरी चीख 150

प्रकृति का रोष 151

उसका निशां 153